लोक नाट्य परम्परा सांग

सोमबीर कुमार
पी.एच.डी. शोधार्थी
महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

लोक संगीत के साथ–साथ लोक विधाओं के अर्न्तगत लोक नाटकों का भी अपना अलग ही महत्व है। प्राचीन काल से ही लोक नाटकों का लोक जीवन से घनिश्ठ सम्बन्ध रहा है। सरल व सीधी भाषा में अभिव्यक्त लोक नाटकों का सीधा सम्बन्ध उत्सवों, मांगलिक अवसरों, धार्मिक पर्वों एवं लोक मनोरंजन से होता है। ऐतिहासिक धार्मिक व काल्पनिक कथानकों पर आधारित इन लोक नाटकों में गद्य के साथ ही बीच–बीच में नृत्य गीत एवं संगीत भी रखा जाता है। गीत पर आधारित लोक नाटकों में तो लोक संगीत ही अपना मुख्य स्थान रखता है। लोक नाट्य में लोक संगीत के सभी अंग समाहित रहते है। डॉ. नगेन्द्र ने लोक नाट्य की गरिमा का वर्णन करते हुए कहा है कि ''लोक नाट्य साहित्य इतना विशाल और महत्वपूर्ण है कि इसमें भारतीय संस्कृति का सहज रूप देखा जा सकता है। इसमें हजारों वर्शों तक सहिष्णु बने रहने वाले कृषकों के जीवन दर्शन का पता लगाया जा सकता है। लोक नाट्यों में वे तत्व निहित है जो समय–समय पर देश काल के अनुरूप जीवंत साहित्य प्रस्तुत करके लोक जीवन को दर्शाने का कार्य करते है। यदि साहनुभूति के साथ इस विशाल साहित्य का अनुशीलन किया जाए तो इस रंगमंच के झीने आवरण से लोक जीवन का शताब्दियों का इतिहास झांकता दिखाई पड़ता है। देश के विशाल जन समूह की आशा–अकांशा, विजय–पराजय, आचार–व्यवहार, साहस–संघर्ष आदि की जीवित कहानी मुखरित हो उठेगी।'' लोक नाट्य के रूप में सांग एक ऐसी विधा के रूप में संस्कृति में विकसित हुई है जो संगीत व अभिनय के मिले–जुले रूप में श्रोताओं के लिए मनोरंजन का मुख्य साधन साबित हुई है इसका मुख्य उद्दे य एक ही

है और वह है मनोरंजन। सांग मनोरंजन के इस उद्दे य को भली–भांति पूर्ण करता है।

सांग का अर्थ :–

''सांग भाब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा के स्वांग भाब्द से हुई है जिसका अर्थ है रूप भरना या नकल करना।''

हरियाणा में सांग की उत्पत्ति और विकास :–

सांग हरियाणा की नाट्य परम्परा का सिरमौर है जिसे यहाँ का 'कौमी' नाटक भी कहा जा सकता है। यह हरियाणा की जनरंजन की एक मनमोहक त्रिवेणी है जिसमें सर्वाधिक मजेदार इसके गीतों की गमक है। सांग का ताना बाना सतरंगे गीतों के कला–तंतुओं से ही बुना जाता है। सांग में यह रागनियों का ही जादू है जो सर चढ़ कर बोलता है। एक हाथ कान पर रखकर दूसरा हाथ आकाश में उठाकर अभिनेता जब विशेष अंदाज में रागनी गाता है तो समा बंध जाता है। इन सांगों में कथानकों के आधार पर गीतों के माध्यम से अभिनय द्वारा रस की ऐसी वर्षा होती है कि मुक्त मंच के चारों ओर बैठे दर्शक रागनियों की स्वर लहरियों में मंत्र मुग्ध हो जाते है। सावन की तरह बरसते संगीत की फुहारें में उनके मन मयूर नाच उठते है। हरियाणा में सांग परम्परा की शुरूआत कब और कैसे हुई इस विषय में अनेक विचारधाराएं प्रचलित है। कुछ विद्वानों के अनुसार सांग परम्परा समाज में प्रचलित मुजरा और नकल आदि की देन है। कुछ विद्वानों के अनुसार हरियाणा में स्वांग शैली का उद्गम भजनीक मण्डलियों की देन है।

सांग सम्राट पं. लखमी चन्द के शिष्य पं. मांगेराम ने अपनी एक रागनी के माध्यम से हरियाणा की सांग परम्परा के इतिहास व स्वरूप पर प्रकाश डाला है।

''हरियाणा की कहाणी सुणलयो दौ–सौ साल की
कई किस्म की हवा चालगी नई चाल की।।
एक ढ़ोलकीया एक सांरगिया अड़े रहैं थे।
एक जनाना एक मर्दाना दो खड़े रहैं थे।
पन्द्रह–सोलहं कूंगर जडकै खड़े रहैं थे।
गली अर गितवाढ्यां के म्ह बड़े रहैं थे।
सब तै पहलम या चतराई कि ान लाल की।''

सम्पूर्ण सांग परम्परा में पं. लखमी चन्द का स्थान मुख्य रूप से माना जाता है। पं. लखमी चन्द के सांग का कार्यकाल कि ान लाल भाट से लेकर आधुनिक सांगियों के कार्यकाल के लगभग मध्य में स्थित है इसलिए हरियाणा में सांग परम्परा को जानने के लिए पं. लखमी चन्द के सांगी जीवन को केन्द्र बिन्दु मानकर हम सांग परम्परा को तीन वर्गों में बांट सकते है

- पूर्व लखमी चन्द
- लखमी चन्द
- उत्तर लखमी चन्द

पूर्व लखमी चन्द युग :–

पूर्व लखमी चन्द युग के अर्न्तगत उन सभी सांगियों का कार्यकाल आता है जो पं. लखमी चन्द से पहले सांग परम्परा को निरंतर हरियाणा के जन–जीवन में आगे बढ़ाते रहे है। हम सांगों के विकास का अध्ययन कि ानलाल भट के कार्यकाल से ही प्रारम्भ करेगें क्योंकि उन से पहले सांगों का जो रूप था उसका कोई विस्तृत वर्णन हमें प्राप्त नहीं होता अर्थात् किसी सांगी कलाकार के किसी प्रमुख योगदान का वर्णन नहीं मिलता। यह काल कि ानलाल भट से भाुरू होता है जिसे सांग परम्परा का पितामह कहा गया है। उसके बाद बंसीलाल, अलीबख्भा, मूलचन्द, बालकराम, अहमदबख्भा, रामलाल खटीक, नेतराम, सूरजभान वर्मा, दीपचन्द, सरूपचन्द, हरदेव तथा बाजेभगत आदि सांगी कलाकारों के नाम मुख्य रूप से आते हैं।

लखमी चन्द युग :– सांग परम्परा में सांग सम्राट पं. लखमी चन्द के आगमन से एक नए युग का आरम्भ हुआ जिससे सांग के इतिहास में एक नया मोड़ आ गया इस युग को लखमी चन्द के नाम से सम्बोधित किया जाने लगा। इस युग में मुख्य रूप से पं. लखमी चन्द और पं. नेकीराम ही मुख्य सांगी माने जाते है।

पं. लखमी चन्द के उत्कर्श अभिनय का उल्लेख उन के शिष्य पं. मांगेराम ने इस प्रकार किया है

''दुनिया के म्ह भाोर माचग्या, लकड़हारा गावण लाग्या।
'मरगे दादा–मरगे दादा, भर–भर ढोल रितावण लाग्या।
बहुत सी दुनिया पाछे छोड़ी नये–नये सांग सुनावण लाग्या।

लखमी चन्द का माईचन्द था काट बैल ज्यूं हाल्या करता।
बागां म्ह नौटंकी बण कै खटोले से साल्या करता।
आगे–आगे नौटंकी और पीछे बामण चाल्या करता।
लखमी चन्द 'माली की' बण कै बान्ध्या करता साडी।
कुछ ख्याल रहया ना दुनिया की चाल बिगाड़ी।''

उत्तर लखमी चन्द युग :– पं. लखमी चन्द के बाद सांग परम्परा को हरियाणा के विकास पथ पर अग्रसर करने वाले लोक कवियों के कार्यकाल को उत्तर लखमी चन्द युग के अर्न्तगत रखा जा सकता है। जिसकी शुरूआत पं. मांगेराम से शुरू होती है। पं. लखमी चन्द के बाद सांग परम्परा में मांगेराम श्रेष्ठ संगीतकार माने जाते है। इन्होंने संगीत का ज्ञान पं. लखमी चन्द से प्राप्त किया था।

''पांणची के म्ह रहण वो मांगे राम सुसाणे का
पहले तो मोटर कार चलाई फेर सांग सीख लिया
लखमी चन्द के डेरे म्ह।''

पं. लखमी चन्द के सांगों का रंग मांगेराम पर ऐसा चढ़ा की उन्होंने लखमी चन्द को अपना गुरू बना लिया और अपनी रचनाओं में उनका नाम बड़ी श्रद्धा के साथ गाया।

''वे मनै सुमर लिए भगवान,
लखमी चन्द सतगुरु मिले मनै जिन तै पा लिया ग्यान।''

उन्होंने लगभग 40 सांगों की रचना की और सांग परम्परा को आगे बढ़ाया